मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

कमिश्नर को शहर में मिले कूड़े के ढेर 3
बुटाना कांड पहुँचा हाईकोर्ट 4
रावत के खिलाफ सीबीआई जांच 5
विचार खिड़की : लैंगिक दादागीरी का चलन 6
नीलम पुल की आग की कोई जांच नहीं 8

वर्ष 33 | अंक 50 | फरीदाबाद | 1-7 नवम्बर 2020 | फोन-8851091460 | ₹ 3.00

निकिता हत्याकांड की आड़ में संघी, भाजपाइयों ने खेला लव-जिहाद कार्ड

हत्या की आड़ में खेल रहे जहरीली राजनीति

बल्लबगढ़ (म.मो.) अग्रवाल कॉलेज बल्लबगढ़ के पास निकिता तोमर हत्याकांड ने ओछी राजनीति का रूप ले लिया है। अगर इस मामले में निकिता के माता-पिता ने आरोपी तौसीफ़ के खिलाफ़ शिकायत वापस न ली होती तो आज निकिता जिंदा होती और तौसीफ़ सलाखों के पीछे होता। भाजपा के जो नेता अब इस मामले को अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए साम्प्रदायिक नफ़रत में बदलना चाहते हैं, वे 2018 में कहां थे? जब निकिता के परिवार पर दबाव डालकर तौसीफ़ के खिलाफ़ शिकायत वापस कराई गई थी।

बीते सोमवार को निकिता की हत्या के पांच घंटे के भीतर बल्लबगढ़ पुलिस ने मुख्य आरोपी तौसीफ़ और रेहान को गिरफ़्तार कर लिया था। इसके बाद हरियाणा सरकार ने इस मामले की जांच के लिए एसआईटी भी बना दी। इसके बावजूद भाजपा और उसके संगठन उल्टा पुलिस के खिलाफ़ एक्शन और अन्य तरह-

तरह गैरकानूनी मांगे उठा रहे हैं।

बीते सोमवार को अग्रवाल कॉलेज बीकॉम फ़ाइनल की छात्रा निकिता परीक्षा देकर बाहर निकली तो तौसीफ़ नामक युवक ने उसे अपनी कार में जबरदस्ती बैठाना चाहा, इन्कार करने पर युवक ने उसे देसी तमंचे से गोली मार दी। मौके की उपलब्ध फुटेज से पता चलता है कि लड़की ने बचने के लिये काफ़ी कोशिश की थी, वह इधर-उधर भागी थी लेकिन बच नहीं पाई। पहली नज़र में इस दुखद और निंदनीय घटना के लिये लचर सुरक्षा व्यवस्था जिम्मेवार है। हर वक्त और हर जगह न सही लेकिन छुट्टी के समय तो स्कूलों, कॉलेजों के बाहर पुलिस और कॉलेज स्टाफ़ की ओर से निगरानी हो सकती है। परन्तु आम आदमी की सुरक्षा को सरकार ने अपने एजेंडे में रखा ही कब था।

इस तरह के मामलों में लड़की के परिजन प्राय: पुलिस पर आरोप लगाते हैं कि लड़का काफ़ी समय से छेड़छाड़ कर लड़की को परेशान कर रहा था, बार-बार शिकायत करने पर पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। परन्तु इस मामले में ऐसा नहीं है, करीब ढाई वर्ष पहले लड़की के पिता की शिकायत पर इसी तौसीफ़ के विरुद्ध बल्लबगढ पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा 365 के तहत एफआईआर नंबर 717/18 दर्ज कर ली थी। पुलिस अपनी कार्रवाई कर ही रही थी कि लड़की के परिजन न केवल शपथपत्र लेकर आ गये बल्कि मैजिस्ट्रेट के सामने धारा 164 में बयान दर्ज कराया कि उसका कोई अपहरण नहीं हुआ था, वह अपनी मर्जी से अपने दोस्त तौसीफ के साथ कार में घूमने गयी थी।

यदि लड़की के परिजन, जो आज इतना हो-हल्ला मचा रहे हैं, यदि उस वक्त पुलिस को अपना काम कर लेने देते तो यही तैसीफ़ आज जेल में सज़ा काट रहा होता और बेचारी निकिता को अपनी जान से हाथ न धोने पड़ते। दरअसल ऐसे मां-बाप ही 'इज्जत' के नाम पर बेटियों को इतना कमज़ोर बना देते हैं कि वे दब कर व डर कर रहने में ही अपनी भलाई समझने लगती हैं।

नितिका की हत्या के लिये अपराधियों को सज़ा मिलनी ही चाहिये, परन्तु किसी की लाश पर निहित स्वार्थी लोगों को अपनी गंदी राजनीति नहीं खेलनी चाहिये। अपराधी केवल अपराधी है न कि हिन्दू या मुसलमान। इस दुखद घटना को लव जिहाद का नाम देकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे कराने की फिराक में सक्रिय तत्व जहरीले प्रचार द्वारा जनता को बहका रहे हैं कि तौसीफ़ ने अपना हिन्दू नाम रख कर निकिता को धोखे में रखा था। भला यह कोई मानने की बात है जब ये दोनों पांचवीं से 12वीं तक रावल स्कूल में साथ-साथ पढे हों तो यह झूठ-फरेब कैसे चल सकता था? खुद मां-बाप ने स्वीकार किया है कि निकिता उसकी कार में अपनी सहेलियों सहित बैठती रही है। **शेष पेज दो पर**

बरोदा के दंगल में फंसी बीजेपी, लेकिन हुड्डा की लीडरशिप और किसान राजनीति पर भी होगा फैसला

यूसुफ किरमानी

बरोदा (सोनीपत) : हरियाणा में 3 नवम्बर को बरोदा उपचुनाव दो खास मुद्दों को तय करने जा रहा है। इसलिए यह उपचुनाव असाधारण हो गया है। बरोदा यह तय कर देगा कि किसान मोदी सरकार के तीन कृषि विरोधी कानूनों से कितना नाराज हैं। यह उपचुनाव भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के बेटे दीपेंदर सिंह हुड्डा की लीडरशिप पर भी मुहर लगाने वाला है। यही वजह है कि बरोदा में कांग्रेस को कैसे जीतना है उसकी पूरी व्यूह रचना भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने तैयार की है। हालांकि मुकाबला त्रिकोणीय दिखता है लेकिन दरअसल यहां मुकाबला कांग्रेस के इंदुराज नरवाल और भाजपा के योगेश्वर दत्त के बीच है। योगेश्वर जहां अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हैं, वहां इंदुराज नरवाल बरोदा की क्षेत्रीय राजनीति में बहुत मजबूत हैं। योगेश्वर दोबारा भाजपा टिकट लेकर चुनाव में उतरे हैं। पिछला चुनाव वो हार चुके हैं।

कांग्रेस का पलड़ा भारी

बरोदा में कांग्रेस का पलड़ा बहुत भारी नजर आ रहा है। जिस तरह पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने यहां डेरा डाला हुआ है और पूरे राज्य से अपने विश्वसनीय नेताओं और कार्यकर्ताओं की फौज बुला ली है उसने पूरे चुनाव की हवा बदल दी। बरोदा के एक-एक गांव को किसी न किसी पूर्व कांग्रेस विधायक और मौजूदा विधायक के जिम्मे सौंपा गया है। मसलन फरीदाबाद से वहां पहुंचे ललित नागर को 6 गांव सौंपे

ट्रैक्टर पर सवार दीपेन्द्र को जूस पिलाते गांव के लोग

गए हैं। इसी तरह पूर्व विधायक महेंद्र प्रताप सिंह के बेटे विजय प्रताप को भी 6 गांव सौंपे गए हैं। इसी तरह नूंह के विधायक आफताब अहमद को भी कुछ गांव सौंपे गए हैं। फरीदाबाद के कांग्रेस नेता लखन सिंगला की ड्यूटी भी हुड्डा ने कुछ गांवों में लगाई है। यह सिर्फ फरीदाबाद के नेताओं की बानगी है। इसी तरह गुड़गांव, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, करनाल, सिरसा, हिसार, हांसी आदि इलाकों के कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता बरोदा में चारों तरफ फैल गए हैं। इन लोगों ने हर गांव में हुड्डा की रैलियां कराईं और उसके बाद अब अंतिम चरण में घर-घर प्रचार करने के लिए सारे लोग पहुंच रहे हैं।

दूसरी तरफ भाजपा प्रत्याशी को सिर्फ और सिर्फ मनोहर लाल खट्टर से ही कुछ चमत्कार की उम्मीद है। खट्टर भी अब 29 अक्टूबर से यहां आकर जम गए हैं और जितने गांव वह अगले तीन-चार दिन में कवर कर सकेंगे, उतने में जाने का इरादा है। भाजपा के भी कई नेता और मंत्री बरोदा आये लेकिन जनता ने उनका उस तरह से स्वागत नहीं किया, जिस तरह वह कांग्रेस की सभाओं में उमड़ रही है। आमतौर पर भाजपा के कार्यकर्ता और उनके परिवार के लोग भाजपा की सभाओं में दिखाई देते हैं, आम लोग नहीं दिखाई देते। हालांकि भाजपा प्रत्याशी के लिए सहयोगी पार्टी जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) ने जोर लगाया हुआ है लेकिन उसके नेताओं का जाट बेल्ट में सीधा विरोध हो रहा है। इसलिए जेजेपी मतदाताओं को बहुत प्रभावित नहीं कर पा रही है।

बरोदा में जाट फैक्टर

भाजपा ने जाट बेल्ट की इस सीट में एक दांव और भी खेला है। उसने इस मुकाबले को जाट बनाम गैर जाट बनाने की कोशिश की लेकिन कांग्रेस उसमें भी बाजी मार ले गई। भाजपा ने जानबूझकर गैर जाट प्रत्याशी योगेश्वर दत्त को इस चुनाव में उतारा है। जबकि कांग्रेस और इनैलो के प्रत्याशी जाट हैं। दरअसल, यहां से एक असरदार जाट नेता डॉ कपूर नरवाल और जोगिन्दर मोर ने नामांकन दाखिल किया था लेकिन भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने अपने प्रभाव से उन दोनों को कांग्रेस के पक्ष में नामांकन वापस कराया। भाजपा यह उम्मीद कर रही थी कि तमाम जाट उम्मीदवारों के बीच उनका गैर जाट प्रत्याशी निकल जाएगा। यहां एक राजनीतिक विश्लेषण और भी निकल कर आ रहा है कि भाजपा हरियाणा में लगातार जाट राजनीति को प्रभावहीन **शेष पेज दो पर**

...और मलिक खाप के समर्थन की कीमत नहीं लग सकी!

जाट बहुल बरौदा विधानसभा क्षेत्र में सबसे ज्यादा मलिक गोत्र के गांव है। ज्यादातर जाट, किसान होने के कारण और मोदी सरकार द्वारा नये लागू किये गये किसान विरोधी कानूनों के कारण, इनसे नाराज है। बीजेपी और कांग्रेस दोनों पार्टियों द्वारा जाट खाप पंचायतों का समर्थन हासिल करने की कोशिश के बावजूद खापों ने किसी का भी खुला समर्थन अभी तक नहीं किया। हालांकि नये कृषि कानूनों के कारण नाराजगी के चलते बीजेपी का भारी विरोध है। सूत्रों के मुताबिक बीजेपी ने मलिक खाप का समर्थन हासिल करने के लिये पिछले दिनों मलिक खाप के प्रधान से अपने उम्मीदवार योगेश्वर दत्त को एक करोड़ रूपए भी भेंट करवाये थे। बताया गया था कि ये रूपए मलिक खाप ने इकट्ठे कर के दिये थे। इस तरह परोक्ष रूप से मलिकखाप का समर्थन हासिल होने का आभास दिया गया। लेकिन जब इसका उग्र विरोध हुआ और खाप प्रधान से जवाब तलब किया गया तो पता चला कि ये पैसे तो बीजेपी ने किसी की मार्फत प्रधान को पहुंचाये थे।

क्या बरौदा में चुनाव आयोग की टीम ऐसी गतिविधियों पर नजर रख पा रही है?